प्रभारती

BULLETIN OF THE DEPARTMENT OF ANCIENT INDIAN HISTORY, CULTURE & ARCHAEOLOGY

Vol. 39 2014-15

Editor
Pushp Lata Singh

A REFREED JOURNAL

CENTRE OF ADVANCED STUDY
DEPARTMENT OF ANCIENT INDIAN HISTORY, CULTURE & ARCHAEOLOGY
BANARAS HINDU UNIVERSITY
VARANASI-221 005 (INDIA)

काशी में कार्तिकेय उपासना : नवीन साक्ष्यों के आधार पर

सुरेन्द्र कुमार यादव

काशी प्राचीन काल से ही शैवधर्म का प्रधान केन्द्र रहा है, जिसके कारण यहाँ शिव एवं उनके परिवार से संबंधित प्रतिमाओं का प्रमाण मिलता है। भगवान शिव के परिवार में कार्तिकेय प्रधान देव माने गये हैं। भारतीय समाज में कार्तिकेय को युद्ध देवता के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। उनकी उत्पत्ति से संबंधित विविध कथाओं के कारण उन्हें विविध नामों यथा स्कन्द, कुमार, विशाख, गुह्य, महासेन, सुब्रह्मण्य एवं भाक्तिधर आदि से संबोधित किया गया है। मुद्राओं में मुख्य रूप से स्कन्द, कुमार, विशाख, महासेन एवं कार्तिकेय नामों का अंकन मिलता है। काशी में कार्तिकेय से संबंधित विविध प्रकार की प्रतिमाएं प्रकाश में आयी हैं जिनमें सबसे महत्वपूर्ण प्रतिमा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भारत कला भवन में सुरक्षित है। इस प्रतिमा में मयूरासीन द्विभुज कार्तिकेय के करों में फल एवं भालू है। मयूर के पंखों का फैलाव प्रभामण्डल के रूप में दर्शित है, जो कलात्मक दृष्टि से अत्यन्त मनोहारी है।

प्रस्तुत शोध पत्र काशी क्षेत्र के ग्रामीण अंचल में सर्वेक्षण से प्राप्त कार्तिकेय के विविध स्वरूपों वाली प्रतिमाओं के अध्ययन पर आधारित है। इनमें मुख्य रूप से वाराणसी जिले के चिरौटाडीह एवं जौनपुर जिले के हीरापट्टी नामक पुरास्थल से प्राप्त कार्तिकेय की प्रतिमाएं महत्वपूर्ण हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इन प्रतिमाओं का प्रतिमाशास्त्रीय लक्षणों, साहित्यक दृष्टान्तों एवं कला साक्ष्यों के आधार पर अध्ययन किया गया है। साथ ही इन प्रतिमाओं के भाव पक्ष, कला पक्ष एवं काल गणना तथा काभी में कार्तिकेय उपासना के महत्व पर गहनता पूर्वक विचार – विमर्श करने का प्रयास किया गया है।

प्राचीन प्रतिमा लक्षणों से संबंधित ग्रन्थों में कार्तिकेय के विविध रूपों का वर्णन मिलता है। कार्तिकेय की प्रतिमा निरुपण का विधान सर्वप्रथम वाराहमिहिर कृत वृहत्संहिता में मिलता है। यहाँ उन्हें सुकुमार युवक के रूप में मयूर पर आसीन, शक्तिधर के रूप में प्रस्तुत करने का निर्देश है।[1] विष्णुधर्मोत्तरपुराण में कार्तिकेय के प्रतिमा शास्त्रीय लक्षणों के विविध स्वरूपों का वर्णन किया गया है।[2] समरांगणसूत्रधार में कार्तिकेय के विविध प्रतिमा प्रकारों एवं लक्षणों का उल्लेख किया गया है, जिनमें उन्हें तरुण अर्क (सूर्य) के समान तेजस्वी, रक्तवर्ण युक्त वस्त्र धारण किये हुये, अग्नि की प्रभा के समान कान्तिमान, विविध आभूषणों से सज्जित, यौवन कुमार के रूप में शडमुखी अथवा एकमुखी के रूप में विविध भुजाओं युक्त वर्णित किया गया है।[3] रूपमण्डन में तरुण रूप वाले कार्तिकेय के द्विभुज और चतुर्भुज स्वरूपों का भी निरुपण हुआ है। द्विभुजी कार्तिकेय शक्ति और कुक्कुट तथा चतुर्भुजी कार्तिकेय भक्ति, पाष एवं वरद व अभयमुद्रा से युक्त होंगे।[4] मत्स्यपुराण में कार्तिकेय के प्रतिमा लक्षण में उन्हें देदीप्यमान, सुकोमल कुमार के रूप में कमल सदृश वर्ण वाले, दण्डधारी, मयूरासीन एवं द्विभुजी, चतुर्भुजी एवं द्वादशभुजी बतलाया गया है।[5]

इसके अतिरिक्त अंशुमदभेदागम्, अपराजितपृच्छा, सुप्रभेदागम, उत्तरकामिकागम्, पूर्वकर्णागम् आदि प्रतिमा शास्त्रीय ग्रन्थों में कार्तिकेय के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन मिलता है। वैदिक वाङ्गमय में स्कन्द का सर्वप्रथम उल्लेख मैत्रायणी संहिता[6] एवं तैत्तिरीय–आरण्यक[7] के परवर्ती भागों में मिलता है। मैत्रायणी संहिता में इन्हें कुमार कार्तिकेय तथा स्कन्द कहा गया है। सर्वप्रथम महाभारत[8] में स्कन्द के जन्म की कथा का विस्तार से उल्लेख हुआ है। मुद्रा में कार्तिकेय का शिल्पांकन लगभग पहली–दूसरी शती सें प्रारम्भ हुआ, जिसके उदाहरण यौधेय एवं कुषाण मुद्राओं पर मिलते है। देव सेनापति के रूप में शिव पुत्र कार्तिकेय को कुमार, महासेना, विशाख, षडानन, अग्नि, गंगापुत्र, शक्तिधर, स्कन्द आदि नामों से अभिव्यक्त किया गया है। कार्तिकेय प्रारम्भ में लोक विश्वास के देवता थे, किन्तु कालान्तर में उनकी महत्ता बढ़ी और ब्राह्मण देवमण्डल में समाविष्ट कर लिये गये। इनका पालन 6 कृत्तिकाओं द्वारा हुआ इसी कारण इनको कात्तिकेय और षड़मुख कहा गया।[9]